International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 22-04-2020; Accepted: 24-04-2020; Published: 02-05-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 2; 2020; Page No. 01-02

अयोध्या दर्शन

डॉ चंदन कुमारी
Department of Hindi, AK Doshi Mahila College, Jamnagar, Gujrat, India

प्रस्तावना

धर्म और संस्कृति का गढ़ अयोध्या, धर्मधारी श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या और इस सदी में पर्यटन के क्षेत्र में विश्व मानचित्र पर भारत की सशक्त पहचान बनकर उभर रहा है अयोध्या | जिन राम की कृपा दृष्टि से प्रलय और सृजन होता है उन्हीं राम की कृपा से काशी के समान मुक्तिदायिनी है अयोध्या | राम की इस जन्मभूमि में हर रोज रामलीला होती है | इसकी सारी व्यवस्था अयोध्या शोध संस्थान के अधिकारी और कर्मचारी देखते हैं | 'केवल अयोध्या में ही नहीं यह संस्था पूरे विश्व में रामलीला का आयोजन करती है | विदेशी रामलीला के कलाकारों को भारत में अपनी प्रतिभा दिखाने में इनका पूरा सहयोग रहता है |'1 पूरा विश्व रामलीला के माध्यम से एक सांस्कृतिक एक्य का अनुभव करता है | यह शोध संस्थान अयोध्या स्थित 'तुलसी स्मारक भवन' में ही है | साधु-संतों से भरी हुई और राम धुन में रमी हुई इस नगरी की शोभा अलौकिक है | स्वयं विश्वनाथ शिव श्रीराम की महिमा गान करते हुए कहते हैं –

"कासीं मरत जंतु अवलोकी | जासु नाम बल करउं बिसोकी ||
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी | रघुबर सब उर अंतरजामी ||"2
'अति प्रिय मोहि यहाँ के वासी' कह कर स्वयं श्रीराम ने सरयू और अयोध्या की महत्ता को प्रतिष्ठापित किया है |

भोले-भाले स्थानीय लोग जिनका चित्त रामलीला में रमा हुआ सा लगता है और रामलला के दर्शनों को उमड़ती पर्यटकों की भीड़ – अयोध्या की पतली सड़कों और तंग गलियों की शोभा हैं जिसके दोनों ओर दुकानें सजी हुई हैं | आनेवाले समय में इसका स्वरूप बदलने की कवायद प्रारंभ हो ही चुकी है | अयोध्या के सरयू तट पर सुबह के सूर्य की लालिमा भरी आभा पड़ रही थी जिससे वह अगाध जलराशि, आँखों को सुहाने वाली झिलमिलाहट से भरी हुई थी | हम जिस घाट पर गए वहाँ कच्ची मिट्टी थी जहाँ पाँव मिट्टी में गोड़ कर हम धीरे-धीरे चल रहे थे | उस माटी और नदी के जल का स्पर्श क्या, उसका दर्शन ही अपूर्व आनंद देनेवाला था | माटी और जल की शीतलता तथा सूर्य की उष्णता समेटे सरयू तट पर श्रद्धालुओं का जमघट था | सबके चेहरे मुस्कान भरे और मन अघाए हुए लग रहे थे | यह पूरा सत्य नहीं हो सकता क्योकि सभी तृप्त होते तो कहीं कुछ अनहोनी सा नहीं घटता पर "अग्नि की उत्पत्ति का यह स्थान"3 असीम शीतलता प्रदान करनेवाला है साथ में मोक्षदायक और त्रिविध ताप नासक भी | स्नान घाट के रूप में ही 'राम की पौड़ी' बनाया गया है जिसमें पक्की सीढ़ियाँ तो हैं पर रख-रखाव और साफ – सफाई के अभाव में यह स्नान के उपयुक्त नहीं जान पड़ा | नया घाट में पक्की सीढ़ियाँ हैं और स्नान के उपयुक्त घाट भी |
गुप्तार घाट (फैजाबाद) सरयू नदी का वह तट है जहाँ श्रीराम जल में समाकर अपने लोक वैकुंठ को चले गए | वैकुंठ लोक जाने से पूर्व श्रीराम ने अपने विराट स्वरूप का दर्शन अयोध्यावासियों को कराया था | लगता है भक्तवत्सल श्रीराम की वह दिव्य आभा, पूर्ण ब्रह्म के उस विराट स्वरूप का तेज आज भी वहाँ विद्यमान है | वहाँ भी हमलोग सुबह 8 बजे के करीब पहुंचे | एक अकथनीय अहसास, गूंगे को गुड़ स्वाद सा हमने वहाँ महसूस किया | कोई शुभ्र, और अलौकिक प्रकाश घाट के उस पार एक नैसर्गिक आभा सी अपनी ओर अनायास ही आकृष्ट कर रही थी | उससे सम्मोहित हो हम निःशब्द उस ओर और समूची जलराशि को अपलक निहार रहे थे | वहाँ की मिट्टी, आबो हवा और उस आसमान में भी कुछ खास बात थी 'उर अनुभवति न कहि सक कोउ' | सृष्टि के कण-कण में रमे हैं राम ! अवधपुरी उन्हें वैसे ही विशेष प्रिय है जैसे शिव को वाराणसी जिसका प्रलय काल में भी नाश नहीं होगा | हमने गुप्तार घाट से जल लिया और घाट पर बने शिव मंदिर में स्थित शिवलिंग पर चढ़ाया | घाट पर कई भव्य मंदिर बने हैं | धरती पर राम की लीला की समाप्ति के सूचक इस गुप्तार घाट की महिमा अक्षुण्ण और यहाँ किए गए पुण्य कर्मों का फल अक्षय है | श्री स्कन्द पुराण में वर्णित इसकी महिमा को घाट पर एक लेख में उत्कीर्ण किया गया है | वहीं से हमने भी जाना, "गुप्तार (गोप्रतार) घाट के समान दूसरा कोई तीर्थ न वर्तमान में है न अतीत में था और न भविष्य में होगा | यह वाराणसी की मणिकर्णिका, उज्जैन के महाकाल और नैमिषारण्य के चक्रतीर्थ के समान महिमावान है | तीर्थराज प्रयाग भी यहाँ कार्तिक मास में रोज स्नान के लिए आते हैं और इस मास में सारे तीर्थ गोप्रतार महातीर्थ में निवास करते हैं | पुष्कर और प्रयाग में माघ और कार्तिक महीने में जो नित्य कल्पवास करने का फल होता है वह मात्र सरयू के दर्शन से प्राप्त हो जाता है | साठ हजार वर्ष तक भागीरथी गंगा में स्नान का जो फल है वह मात्र आधे क्षण में अयोध्या में प्राप्त होता है | सरयू नदी की उत्पत्ति के संबंध में एक पौराणिक कथा प्रचलित है जिसके अनुसार प्राचीन समय में अयोध्या में कोई नदी नहीं थी | राजा इक्ष्वाकु ने अपने गुरु ब्रह्मापुत्र वशिष्ठ से नदी के निमित्त प्रार्थना की | गुरुदेव ने अपने पिता एवं सृष्टिकर्ता ब्रह्मा को प्रसन्न किया और उनसे सरयू नदी को लाने की आज्ञा प्राप्त की | ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा सरयू नदी का अवतरण दिवस है | इसका स्रोत कैलाश मानसरोवर है | यह मानसरोवर से निकलकर पिथौरागढ़, काठगोदाम, टनकपुर, पीलीभीत, मैलानी, बहराइच, गोंडा, फैजाबाद और अयोध्या से होते हुए गंगा में ही मिलती है | शारदा (उत्तरप्रदेश), काली नदी (उत्तराखंड), देविका, घाघरा, रामप्रिया, नेत्रजा, इत्यादि सरयू नदी के अन्य नाम हैं | शारदा नदी का जुड़ाव नेपाल की सीमा से है |"4 पुराणों में सरयू नदी को अग्नि की उत्पत्ति का स्थान माना गया है | सरयू नदी से संबंधित इन तथ्यों की प्राप्ति का स्रोत स्थानीय लोगों से वार्तालाप एवं यत्र-तत्र उत्कीर्ण लेख ही हैं | जिस सरयू के जल में राम अंतर्ध्यान हुए उसी के किनारे बसे अयोध्या में हनुमान गढ़ी को हनुमान ने

अपना स्थान बना लिया | जहाँ राम हैं हनुमान भी वहीं | अयोध्या की हनुमान गढ़ी में आज भी बसते हैं हनुमान, माता सीता के आशीष को प्रतिफलित करते हुए |

'आसिष दीन्हि रामप्रिय जाना | होहु तात बल सील निधाना ||
अजर अमर गुणनिधि सुत होहूं | करहि बहुत रघुनायक छोहू ||'5

कलयुग में रुद्रावतार हनुमान साक्षात देव हैं जो भूमि पर विचरण करते हैं | इसका उल्लेख गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित कल्याण के हनुमान अंक में भी है | जहाँ कहीं भी रामनाम का गान होता है वहाँ ये स्व्यमेव उपस्थित होते हैं | हनुमान गढ़ी में लगातार श्रद्धालु बैठकर सुंदरकांड और रामायण का पाठ करते रहते हैं | एक सज्जन नियमित रूप से वहाँ बैठकर हर पाठ करने वाले व्यक्ति का चरण स्पर्श करते हैं | ऐसा करते हुए वे किसी की उम्र नहीं देखते | राम का नाम लेनेवाले हर इंसान उनके लिए प्रणम्य है , साक्षात सीता राम सरकार है | हम इस दृश्य के साक्षी बने 14 अप्रैल 2018 को जब हनुमद दर्शन के पश्चात हम भी पाठ करनेवालों की कतार में बैठे थे | हनुमान गढ़ी मंदिर की सीढ़ियों पर वानर दर्शन भी सुलभ है | रामकाज पूरा करने के बाद रामजन्मभूमि और अयोध्या की रक्षा के साथ समस्त जीवों का कल्याण करनेवाले श्री हनुमान माता अंजना की गोद में बाल रूप में हनुमान गढ़ी में विराजमान हैं जिनका दर्शन करने के बाद हम रामलला के दर्शन के लिए गए जो श्रीराम की जन्मभूमि है | वहाँ की सुरक्षा व्यवस्था बहुत कड़ी थी और तंबू में श्रीराम की मोहिनी मूरत थी जिसे दूर से ही देखना था | अब तो स्थितियाँ बदलने वाली हैं |

उसके बाद हम कनक भवन गए | कनक भवन में माता सीता के साथ श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न की मनोहारी मूर्ति है | इन मूर्तियों के शीश पर स्वर्ण मुकुट सुशोभित है | इनका शृंगार सप्ताह के सातों दिन अलग – अलग किया जाता है | हर दिन इनकी शोभा अनुपम होती है | मंदिर का प्रांगण बड़ा विशाल और साफ-सुथरा है | मंदिर के मुख्य दरवाजे के पास हनुमान स्वरूप वानरों के झुंड घूमते - टहलते दिखाई पड़ते हैं | कभी – कभार गौ माता के भी दर्शन हो जाते हैं | कनक मंदिर ट्रस्ट की ओर से संचालित भोजनालय मंदिर से थोड़ी दूर पर ही स्थित है | इस भोजनालय में जहाँ सादा भोजन की व्यवस्था है वहीं घी में बनाया गया भोजन भी मिलता है | स्वादिष्ट और स्व्च्छ अन्न, वह भी भरपेट और कीमत जो जेब सह सके ! लोग थाली की कीमत अदा करें और छककर खाएँ | हमलोग दो वर्ष पूर्व अयोध्या गए थे तब वहाँ का लुत्फ उठाया था | जनश्रुति के अनुसार माता सीता विवाह के पश्चात जब अयोध्या आईं थीं तब माता कैकेई ने मुँह दिखाई के रूप में उन्हें एक स्वर्ण निर्मित भवन भेंट किया था | वर्तमान समय में यह कनक भवन उसी स्थान पर निर्मित है | प्रेम में पगी सास द्वारा बहु को दिया गया भेंट है 'कनक भवन' | अयोध्या में "छोटी देवकाली (मिथिला की कुलदेवी) मंदिर है जो माँ सीता की कुलदेवी हैं जिन्हे वे विवाहोपरांत जनकपुर से अयोध्या अपने साथ लायी थी और उनकी विधिवत प्रतिष्ठा अयोध्या में की गई |"6 बड़ी देवकाली मंदिर फैजाबाद और अयोध्या के बीच में है | ये रघुकुल की कुलदेवी हैं | ऐसा माना जाता है कि यहाँ प्रतिष्ठित माता की मूर्ति राजा इक्ष्वाकु द्वारा प्रतिष्ठित की गयी प्राचीन मूर्ति ही है | सरयू तट से कुछ दूर नागेश्वरनाथ मंदिर है जिसकी स्थापना कुश के द्वारा की गई | इसके पीछे जनश्रुति है कि एक बार जब कुश सरयू नदी में स्नान कर रहे थे तब उनका बाजूबंद नदी में गिर गया | वह बाजूबंद एक नागकन्या को मिला | वह नागकन्या राजकुमार कुश पर मोहित हो गई जिससे बाद में दोनों का विवाह संपन्न हुआ | वह नागकन्या शिवभक्त थी | राजकुमार कुश ने उनके लिए नागेश्वरनाथ का मंदिर बनवाया | कई बार इस मंदिर को ही लोग ज्योतिर्लिंग नागेश्वरनाथ समझ लेते हैं जबकि ज्योतिर्लिंग नागेश्वरनाथ द्वारका (गुजरात) में है | अयोध्या के इस मंदिर के बाहर छोटे बच्चे हाथ में साँप की पिटारी लिए घूमते हैं | इन साँपों के विषदंत को निकाल दिया जाता है | मंदिर के बाहर ही कतार में फूलों की डलियाँ, बेलपत्र, धतूरे लिए लोग बैठे रहते हैं | कुछ मछली के लिए आटे की लोई लिए बैठते हैं इस उम्मीद में कि लोग ले ही लेंगे और लोग लेते भी हैं | सरयू नदी में स्नान के उपरांत लोग नागेशवरनाथ को जल अर्पित करते हैं | वहाँ से आगे थोड़ी दूर जाने पर ही 'काले राम गोरे राम' का मंदिर है | इसके बाहर लिखा हुआ है 'अयोध्या का स्वर्ग' | मान्यता है कि इस स्थान पर श्रीराम ने अश्वमेघ यज्ञ (बाजिमेध) किया था | रामचरितमानस में स्थान का उल्लेख नहीं है पर अश्वमेघ यज्ञ करने का उल्लेख है |

"कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हे | दान अनेक द्विजन्ह कहँ दीन्हे ||"7

हनुमान गढ़ी के पास ही दंतधावन कुंड है जहाँ श्रीराम सभी भाइयों के साथ दाँत धोया करते थे | इस कुंड को चमत्कारी कुंड कहा जाता है | इसके स्पर्श मात्र से सारे पाप नष्ट हो जाते हैं | अयोध्या के समीप ही नंदिग्राम है जहाँ राम की चरण पादुका को अयोध्या के सिंहासन पर विराजित करने के बाद भरत वनवासी के रूप में चौदह वर्ष तक पर्णकुटी बना कर रहे थे |

"सुनि सिख पाइ असीस बड़ि गनक बोली दिनु साधि |
सिंहासन प्रभु पादुका बैठारे निरुपाधि ||
राम मातु गुर पद सिरु नाई | प्रभु पद पीठ रजायसु पाई ||
नंदीगांव करि परन कुटीरा | कीन्ह निवासु धरम धुर धीरा ||"8

उस स्थान पर भरत की कुटिया के साथ एक जलाशय भी है जिसे भरत कुंड के नाम से जाना जाता है | इस स्थान को भायप भक्ति और प्रेम के अन्यतम प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है |

संदर्भ सूची

1. 14 अप्रैल 2018, अयोध्या, डॉ. योगेंद्र प्रताप सिंह (निदेशक, अयोध्या शोध संस्थान) एवं श्री रामतीरथ जी (प्रबंधक, अयोध्या शोध संस्थान) से भेंटवार्ता एवं संस्थान के कार्यकलापों के नैरंतर्य अवलोकन के आधार पर.
2. तुलसीदास, छिहत्तरवां पुनर्मुद्रण, मंझला साइज़, रामचरितमानस, गोरखपुर: गीता प्रेस, बालकाण्ड दोहा 118 – 1.
3. श्री स्कन्द पुराण, गोरखपुर : गीता प्रेस.
4. गुप्तार (गोप्रतार घाट) के तट पर सीमेंट के चौकोर पट्टों पर उत्कीर्ण आलेख एवं स्थानीय निवासियों से बातचीत के आधार पर.
5. तुलसीदास, छिहत्तरवां पुनर्मुद्रण, मंझला साइज़, रामचरितमानस, गोरखपुर: गीता प्रेस, सुन्दरकाण्ड दोहा 16 – 1, 2.
6. छोटी देवकाली मंदिर के पुजारी से बातचीत के आधार पर
7. तुलसीदास, छिहत्तरवां पुनर्मुद्रण, मंझला साइज़, रामचरितमानस, गोरखपुर: गीता प्रेस, उत्तरकाण्ड, दोहा 23 – 1.
8. वही, अयोध्याकाण्ड, दोहा 323, 323 – 1.